

श्रीमद्भागवतम् स्कन्ध 10 अध्याय 44 — कंस-वध

5 October 2026



मथुरा की रंगशाला में ब्रज के दो सुकुमार बालक राजा के मल्लों को परास्त कर देते हैं, और फिर स्वयं प्रभु ऊँचे राजमंच पर कूदकर कंस के दीघ अत्याचार का निर्धारित अन्त कर देते हैं।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्रीमद्भागवतम् विज्ञम में पुनः स्वागत है — श्रीमद्भागवत महापुराण की पवित्र कथाओं और शिक्षाओं की हमारी भक्तिमयी यात्रा। दशम स्कन्ध का यह चौवालीसवाँ अध्याय वह घड़ी है जिसकी ओर कृष्ण-जन्म के बाद का प्रत्येक अध्याय बढ़ता आया है: समस्त मथुरा के सामने दोनों भाई चाणूर और मुष्टिक से मल्लयुद्ध करते हैं, और प्रभु अन्ततः कंस पर अपना हाथ रखते हैं।

अध्याय-परिचय

- शास्त्र: श्रीमद्भागवत महापुराण
- स्कन्ध: 10 (दशम स्कन्ध, पूर्वार्ध)
- अध्याय: 44 (चतुश्चत्वारिंश अध्याय)

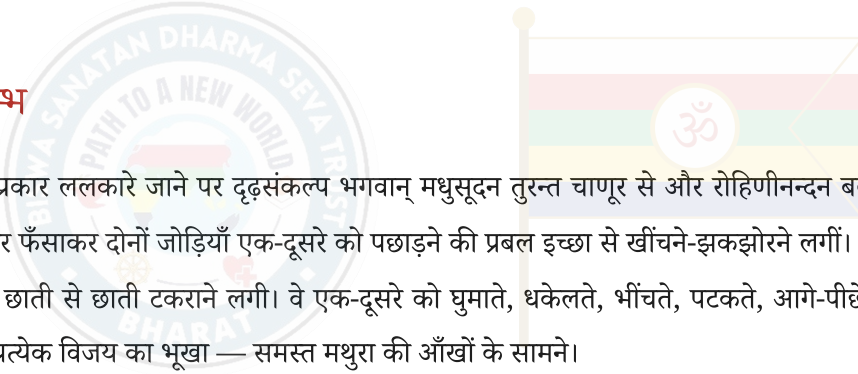
- अध्याय शीर्षक: कंस-वध
- मुख्य वक्ता: श्री शुकदेव गोस्वामी (राजा परीक्षित को सुनाते हुए)
- मुख्य श्रोता: राजा परीक्षित
- मुख्य स्थल: मथुरा की रंगशाला, कंस के राजमंच के सामने
- केंद्रीय विषय: मल्लयुद्ध; मथुरा की स्त्रियों के वचन; कंस का वध; रानियों का विलाप; वसुदेव-देवकी की मुक्ति
- मुख्य श्लोक-सीमा: स्कन्ध 10, अध्याय 44, श्लोक 1-51
- मूल संस्करण: गीता प्रेस श्रीमद्भागवत महापुराण (दशम स्कन्ध)

पूर्व अध्याय का संदर्भ

अध्याय 43 में कृष्ण ने रंगशाला के द्वार पर कुवल्यापीड हाथी का वध किया और उसका दाँत कन्धे पर रखकर भीतर प्रवेश किया। कंस के प्रधान मल्ल चाणूर ने दोनों भाइयों को राजा के समक्ष मल्लयुद्ध के लिए आमन्त्रित किया। कृष्ण ने बराबरी वालों के बीच न्यायपूर्ण युद्ध की बात कही; चाणूर ने उत्तर दिया कि उस महाबली हाथी को मारने वाले बालक नहीं हैं, और कृष्ण को अपने से तथा बलराम को मुष्टिक से भिड़ने का आह्वान किया।

मल्लयुद्ध का आरम्भ

शुकदेवजी ने कहा: इस प्रकार ललकारे जाने पर दृढसंकल्प भगवान् मधुसूदन तुरन्त चाणूर से और रोहिणीनन्दन बलराम मुष्टिक से भिड़ गए। हाथ में हाथ और पैर में पैर फँसाकर दोनों जोड़ियाँ एक-दूसरे को पछाड़ने की प्रबल इच्छा से खींचने-झकझोरने लगीं। कोहनी से कोहनी, घुटने से घुटना, सिर से सिर और छाती से छाती टकराने लगी। वे एक-दूसरे को घुमाते, धकेलते, भींचते, पटकते, आगे-पीछे सरकते; उठाते, ले जाते, फेंकते और जकड़ते — प्रत्येक विजय का भूखा — समस्त मथुरा की आँखों के सामने।





चाणूर की ललकार पर कृष्ण उससे और बलराम मुष्टिक से भिड़ जाते हैं; हाथ में हाथ और पैर में पैर फँसाए दोनों जोड़ियाँ समस्त मथुरा के सामने एक-दूसरे को पछाड़ने का प्रयत्न करती हैं (श्लोक 1-5)।

मथुरा की स्त्रियों के वचन

यह बलवान और निर्बल के बीच का युद्ध था, और वहाँ उपस्थित स्त्रियाँ इसे चुपचाप न देख सकीं। करुणा से भरकर वे झुण्डों में इकट्ठी हुईं और आपस में कहने लगीं, ‘इन सभासदों का कितना बड़ा अधर्म है, जो राजा के देखते-देखते ऐसा विषम युद्ध होने देते हैं! एक ओर वज्र-से कठोर अंगों वाले, पर्वत-सदृश दो मल्ल; दूसरी ओर अत्यन्त सुकुमार अंगों वाले दो किशोर, जिन्हें अभी यौवन भी नहीं मिला। इस सभा का धर्म अवश्य नष्ट होगा, क्योंकि जहाँ अधर्म सिर उठाए वहाँ कभी नहीं ठहरना चाहिए।’

न सभां प्रविशेत् प्राज्ञः सभ्यदोषाननुस्मरन् ।

अब्रुवन् विब्रुवन्नो नरः किल्बिषमश्रुते ॥ १० ॥

na sabhāṁ praviśet prājñaḥ sabhya-doṣān anusmaran abruvan vibruvann ajño naraḥ kilbiṣam aśnute

अर्थ: बुद्धिमान व्यक्ति सभासदों के दोषों को जानते हुए सभा में प्रवेश ही न करे; क्योंकि वहाँ जो मौन रहता है, या मिथ्या बोलता है, या अनजान बन जाता है, वह पाप का भागी होता है। (स्कन्ध 10, अध्याय 44, श्लोक 10)

फिर भी, युद्ध की निन्दा करते हुए भी उनकी आँखें प्रभु पर ही टिकी रहीं। ‘देखो कृष्ण का कमल-मुख,’ वे बोलीं, ‘अपने प्रतिद्वन्द्वी के चारों ओर फुर्ती से घूमते हुए, पसीने की बूँदों से ऐसा भीगा जैसे जल-कणों से छिड़की कमल-कली। और बलराम का मुख देखो — मुष्टिक पर क्रोध से रक्तिम नेत्र, हँसी और रण-उत्साह से दमकता हुआ।’ तब उनके मन व्रज की ओर उड़ चले।

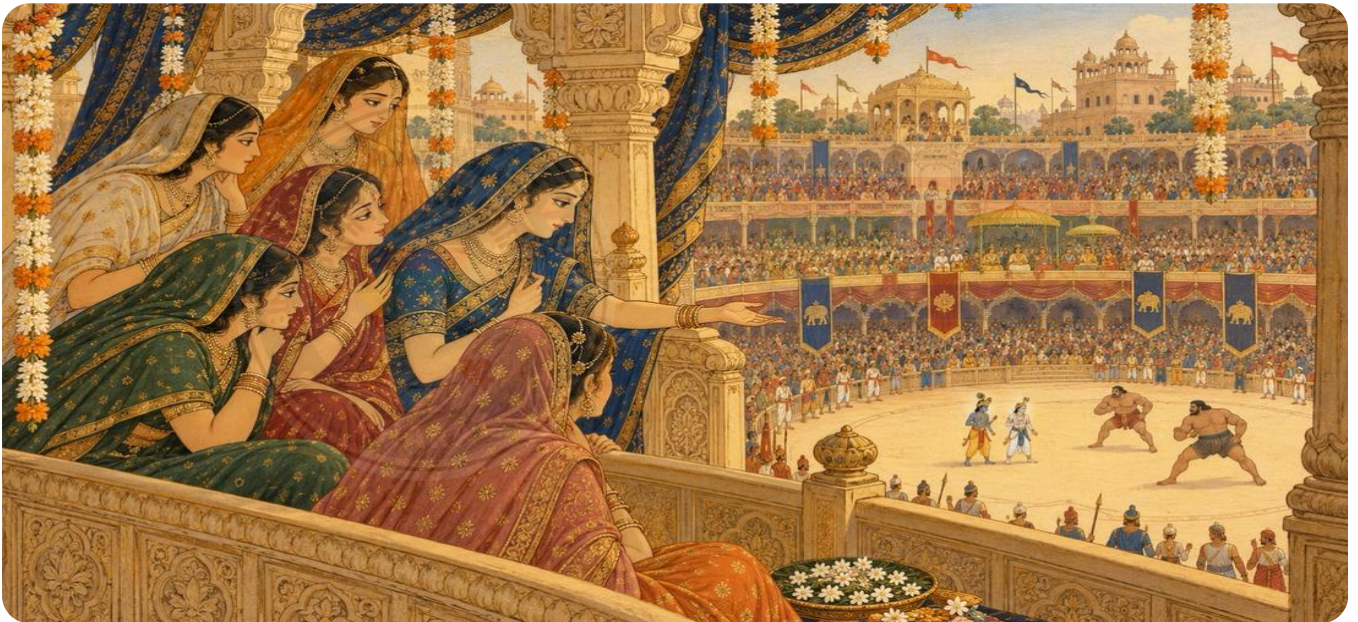
पुण्या बत ब्रजभुवो यदयं नृलिङ्गगूढः पुराणपुरुषो वनचित्रमाल्यः ।

गाः पालयन् सहबलः क्वणयंश्च वेणुं विक्रीडयाञ्चति गिरित्ररमार्चिताङ्घ्रिः ॥ १३ ॥

*puṇyā bata vraja-bhuvo yad ayaṁ nṛ-liṅga- gūḍhaḥ purāṇa-puruṣo vana-citra-mālyah gāḥ
pālayan saha-balaḥ kvaṇayaṁś ca veṇuṁ vikrīḍayañcati giritra-ramārcitāṅghriḥ*

अर्थ: अहो, ब्रज की भूमि धन्य है, जहाँ यह पुराणपुरुष, मनुष्य-रूप में छिपे हुए, वन-पुष्पों की विचित्र माला पहने, जिनके चरण शिव और लक्ष्मी द्वारा पूजित हैं, बलराम के साथ गौएँ चराते और वेणु बजाते हुए क्रीड़ा करते विचरते हैं। (स्कन्ध 10, अध्याय 44, श्लोक 13)

‘गोपियों ने कौन-सी तपस्या की,’ वे कहती रहीं, ‘कि वे अपनी आँखों से इनके उस रूप का पान करती हैं जो लावण्य का सार है, नित्य नवीन और दुर्लभ? धन्य हैं ब्रज की वे स्त्रियाँ जो गौ दुहते, दही मथते और पालना झुलाते इनका गुणगान करती हैं, कण्ठ आँसुओं से रूँधा हुआ; और भाग्यशाली हैं वे जो प्रातः-सायं इनकी वेणु सुनकर दौड़कर मार्ग पर आ जाती हैं और इनका सदय, मुस्कराता मुख निहारती हैं।’



विषम युद्ध पर दया करती मथुरा की स्त्रियाँ इसे होने देने वाले सभासदों की निन्दा करती हैं, फिर प्रभु के कमल-मुख पर विस्मित होकर ब्रज की भूमि को धन्य कहती हैं (श्लोक 6-16)।

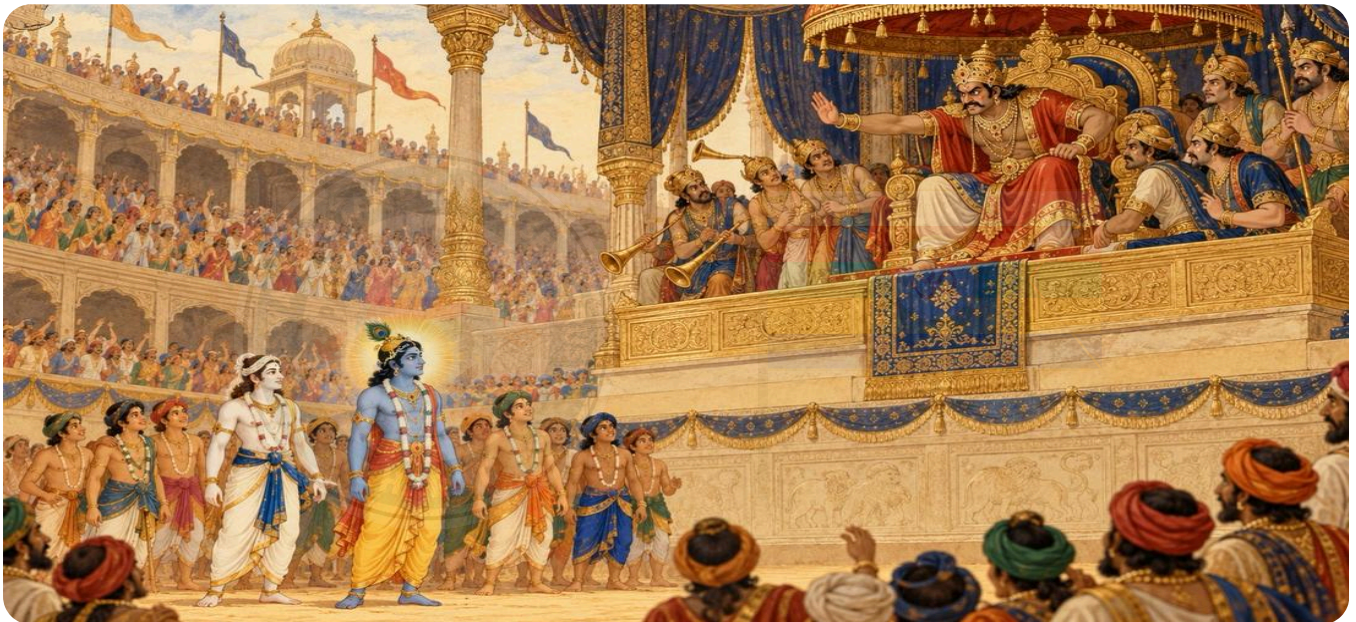
चाणूर और मुष्टिक का पतन

जब स्त्रियाँ इस प्रकार व्याकुल स्वर में बोल रही थीं, तब सबके हृदय जानने वाले योगेश्वर श्रीहरि ने अपने शत्रु का अन्त करने का निश्चय किया। उन भयभरे वचनों को सुनकर वसुदेव और देवकी, जो अपने पुत्रों का बल नहीं जानते थे, चिन्ता से सन्तप्त हो उठे। दोनों जोड़ियाँ मल्लयुद्ध की हर विधि से लड़ती रहीं, और वज्रपात-से कठोर भगवान् के अंगों के प्रहारों से चाणूर का शरीर बार-बार टूटता गया और वह ग्लानि से भर गया। बाज की गति से उछलकर उसने दोनों मुट्ठियाँ बाँधीं और क्रोध में प्रभु की छाती पर प्रहार किया। उस प्रहार से कृष्ण उतने भी नहीं हिले जितना पुष्पमाला से छुआ गया हाथी। उन्होंने चाणूर को भुजाओं से पकड़ा, अनेक बार घुमाया और भूमि पर पटक दिया; घूमते-घूमते ही उसके प्राण निकल चुके थे, और आभूषण-केश बिखरे वह इन्द्रध्वज की भाँति गिर पड़ा।

उसी प्रकार मुष्टिक ने पहले बलराम पर मुष्टि-प्रहार किया और बदले में बलवान बलभद्र की हथेली की मार खाई; काँपता हुआ, मुख में रक्त उमड़ता, वह आँधी से गिरे वृक्ष की भाँति निष्प्राण हो गिरा। तब मल्ल कूट आगे आया और योद्धाओं में श्रेष्ठ बलराम ने खेल-खेल में बाएँ मुक्के से उसे समाप्त कर दिया। उसी क्षण शल कृष्ण के चरण-प्रहार से गिरा और तोशल तिनके की तरह टूट गया। इन पाँचों के जाते ही शेष मल्ल प्राण बचाकर भागे, और दोनों भाई अपने ग्वाल-मित्रों को रंगशाला में खींच लाए और तुरही-नाद के बीच, नूपुर झनकाते, उनके संग नाचने लगे।

कंस की अन्तिम आज्ञा

बलराम और कृष्ण के इस पराक्रम पर सब लोग हर्षित हुए, और श्रेष्ठ ब्राह्मण तथा सज्जन ‘साधु! साधु!’ पुकार उठे — केवल कंस नहीं। भोजराज ने अपनी तुरहियाँ रुकवा दीं और आज्ञा दी: ‘वसुदेव के इन दोनों दुराचारी पुत्रों को नगर से बाहर निकालो। ग्वालों का धन छीन लो और दुष्ट नन्द को बाँध दो। दुर्बुद्धि वसुदेव को, जो नीचों में नीच है, तुरन्त मार डालो, और मेरे पिता उग्रसेन को भी उनके अनुचरों सहित, क्योंकि उन्होंने मेरे शत्रुओं का पक्ष लिया है।’



मल्लों के गिर जाने पर कंस तुरहियाँ रुकवाकर आज्ञा देता है कि दोनों भाइयों को निकाला जाए, नन्द को बाँधा जाए और वसुदेव तथा उग्रसेन को मार डाला जाए (श्लोक 30–

33)।

कंस-वध

कंस के इस प्रकार बड़बड़ाने पर अच्युत प्रभु क्रुद्ध हो उठे; एक हल्की छलौंग में वे ऊँचे राजमंच पर जा चढ़े। अपनी मृत्यु को निकट आते देख अभिमानी कंस उठ खड़ा हुआ और तलवार-ढाल उठा ली। किन्तु जब वह तलवार लिए आकाश में बाज की भाँति दाएँ-बाएँ घूम रहा था, तब दुःसह उग्र तेज वाले कृष्ण ने उसे दृढ़ पकड़ में ले लिया, जैसे गरुड़ सर्प को पकड़ लेते हैं।

प्रगृह्य केशेषु चलत्किरीटं निपात्य रङ्गोपरि तुङ्गमञ्चात् ।

तस्योपरिष्ठात् स्वयमब्जनाभः पपात विश्वाश्रय आत्मतन्त्रः ॥ ३७ ॥

pragr̥hya keśeṣu calat-kirīṭaṁ nipātya raṅgopari tuṅga-mañcāt tasyopariṣṭāt svayam abja-nābhaḥ papāta viśvāśraya ātma-tantraḥ

अर्थ: उसके केश पकड़कर, गिरते हुए मुकुट सहित, उसे ऊँचे मंच से रंगभूमि में पटककर, स्वयं कमलनाभ प्रभु — विश्व के आश्रय, जो किसी पर निर्भर नहीं — उसके ऊपर कूद पड़े। (स्कन्ध 10, अध्याय 44, श्लोक 37)

फिर, संसार के देखते-देखते, प्रभु ने उसके निष्प्राण शरीर को भूमि पर ऐसे घसीटा जैसे सिंह हाथी को घसीटता है, और सब लोगों से ‘हा! हा!’ का महान स्वर उठा। किन्तु इस भयानक दृश्य में छिपी कृपा को देखिए। वर्षों से कंस भय से उद्विग्न मन लेकर उसी चक्रधारी प्रभु को अपने जीवन के हर कर्म में सामने देखता रहा था; और उस अखण्ड स्मरण से, भले वह भय से उपजा हो, उसने मृत्यु के बाद प्रभु का वही रूप पा लिया।

स नित्यदोद्विग्नधिया तमीश्वरं पिबन्नदन्वा विचरन् स्वपन् श्वसन् ।

ददर्श चक्रायुधमग्रतो यतस्तदेव रूपं दुरवापमाप ॥ ३९ ॥

sa nityadodvigna-dhiyā tam īśvaram pibann adan vā vicaran svapan śvasan dadarśa cakrāyudham agrato yatas tad eva rūpaṁ duravāpam āpa

अर्थ: क्योंकि सदा भय से उद्विग्न मन के कारण वह उसी ईश्वर को, चक्र धारण किए, अपने सामने देखता रहता था — पीते, खाते, चलते, सोते, यहाँ तक कि साँस लेते हुए भी — इसलिए उसने प्रभु का वही अत्यन्त दुर्लभ रूप पा लिया। (स्कन्ध 10, अध्याय 44, श्लोक 39)

यही इस अध्याय का हृदय है। प्रभु कंस को वैसे नहीं मारते जैसे एक राजा अपने प्रतिद्वन्द्वी को मिटाता है; वे उसे परमेश्वर के रूप में मारते हैं, एक ऐसी आत्मा को मुक्त करते हुए जो, चाहे विपरीत भाव से ही, उनका चिन्तन छोड़ नहीं पाई। जिस आतंक ने कंस से अपनी बहन को बन्दी बनवाया और उसके नवजात शिशुओं का वध करवाया, उसी ने उसका मन निरन्तर कृष्ण में लगाए रखा; और ऐसी तन्मयता, शत्रुता में भी, वह फल देती है जिसके लिए योगी जन्मों तक श्रम करते हैं। इसलिए कंस पर प्रभु का हाथ एक साथ दण्ड भी है और अनुग्रह भी: मथुरा का अत्याचार समाप्त होता है, निर्दोष बच जाते हैं, और स्वयं अत्याचारी मृत्यु के पार प्रभु की सारूप्यता में पहुँचा दिया जाता है।

कंस के भाई और रानियों का विलाप

कंस के आठ छोटे भाई — कंक, न्यग्रोध आदि — क्रोध से जलते हुए भाई का बदला लेने कृष्ण पर दौड़े; किन्तु बलराम ने परिघ उठाकर उन्हें आते ही वैसे समाप्त कर दिया जैसे सिंह पशुओं को। आकाश में दुन्दुभियाँ बजीं; ब्रह्मा, शिव और अन्य विभूतियों ने पुष्प-वर्षा करते हुए प्रभु की स्तुति की, और अप्सराएँ नाच उठीं।

तब मारे गए वीरों की पत्नियाँ अपने प्रियजनों के शोक में, आँखों में आँसू लिए और सिर पीटती हुई, रंगभूमि में आई, और वीरशय्या पर पड़े अपने पतियों को गले लगाकर ऊँचे स्वर में विलाप करने लगीं। ‘हा प्रिय नाथ, धर्मज्ञ, दीनों पर दया करने वाले,’ वे रोई, ‘आपके मारे जाने से हम भी घर-सन्तान सहित मारी गईं। आपसे रहित यह नगरी उत्सव-मंगल खोकर वैसे ही शोभाहीन हो गई है जैसे हम।’ फिर भी शोक के बीच रानियों ने स्पष्ट देखा: ‘आपने निर्दोष प्राणियों का घोर द्रोह किया, और उसी से आप इस दशा को पहुँचे। प्राणियों का द्रोही कभी सुख कैसे पा सकता है?’

सर्वेषामिह भूतानामेष हि प्रभवाप्ययः ।

गोप्ता च तदवध्यायी न क्वचित्सुखमेधते ॥ ४८ ॥

sarveṣām iha bhūtānām eṣa hi prabhavāpyayaḥ goptā ca tad-avadhyāyī na kvacit sukham edhate

अर्थ: ये श्रीकृष्ण ही इस संसार के समस्त प्राणियों के उत्पत्ति-स्थान, लय और रक्षक हैं; जो इनका अनादर करता है, वह कभी सुख से नहीं फलता-फूलता। (स्कन्ध 10, अध्याय 44, श्लोक 48)



राजविधवाएँ अपने पतियों के लिए विलाप करती हैं, फिर भी स्वीकार करती हैं कि निर्दोषों का द्रोही कभी शान्ति नहीं पाता; प्रभु उन्हें सान्त्वना देकर अन्त्येष्टि विधिपूर्वक करवाते हैं (श्लोक 43-49)।

प्रभु माता-पिता को मुक्त करते हैं

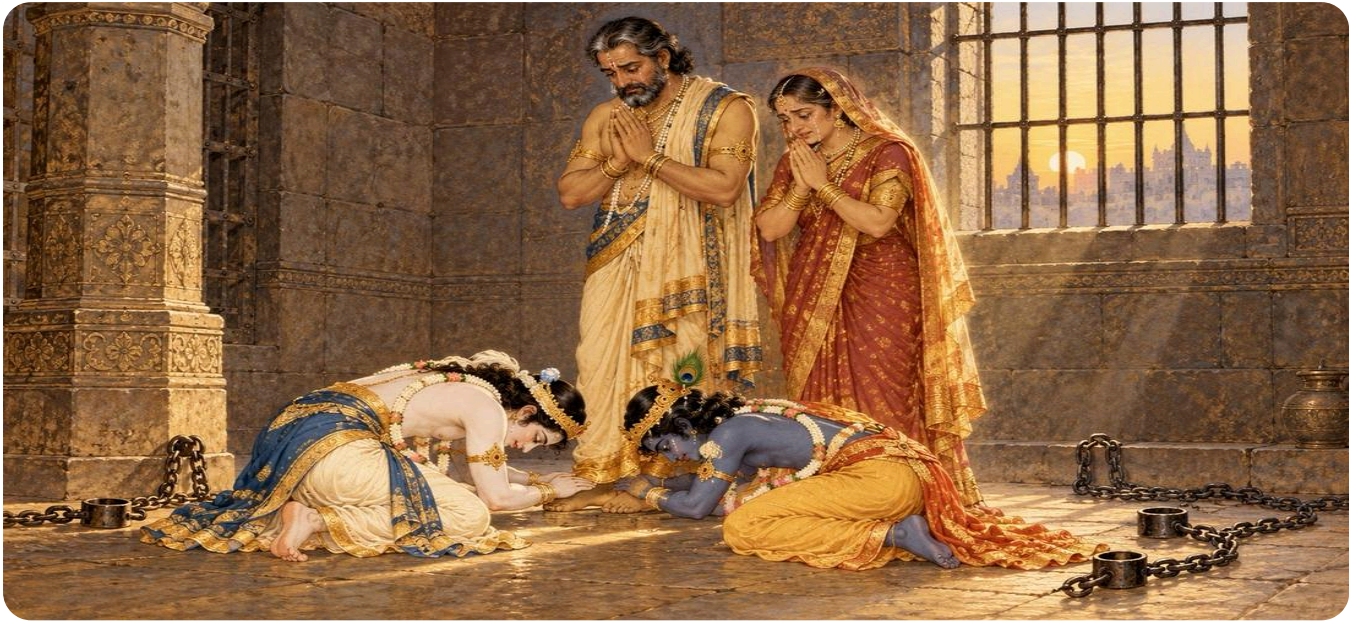
शुकदेवजी ने कहा: राजरानियों को सान्त्वना देकर लोकपालक प्रभु ने मृतकों की लौकिक अन्त्येष्टि उनके परलोक-कल्याण के लिए विधिपूर्वक करवाई। फिर कृष्ण और बलराम ने अपने माता-पिता को बन्धन से छुड़ाया और सिर से उनके चरण छूकर प्रणाम किया। किन्तु देवकी और वसुदेव, यह जानकर कि उनके सामने झुके ये पुत्र जगत् के ईश्वर हैं, सम्भ्रम से ठिठक गए और उन्हें गले न लगा सके।

देवकी वसुदेवश्च विज्ञाय जगदीश्वरौ ।

कृतसंवन्दनौ पुत्रौ सस्वजाते न शङ्कितौ ॥ ५१ ॥

devakī vasudevaś ca vijñāya jagad-īśvarau kṛta-saṁvandanau putrau sasvajāte na śaṅkitau

अर्थ: देवकी और वसुदेव ने प्रणाम करते हुए अपने पुत्रों को जगदीश्वर जानकर, शंकित होकर, उन्हें आलिंगन नहीं किया। (स्कन्ध 10, अध्याय 44, श्लोक 51)



बन्धन से मुक्त वसुदेव और देवकी कृष्ण-बलराम का प्रणाम पाते हैं और उन्हें जगत् के ईश्वर जानकर सम्भ्रम से ठिठके रह जाते हैं (श्लोक 50-51)।

इस अध्याय की प्रमुख शिक्षाएँ

1. अधर्म को अपनी उपस्थिति कभी न दें। मथुरा की स्त्रियाँ घोषित करती हैं कि विषम युद्ध सहने वाली सभा अपना धर्म खो देती है। अन्याय के सामने मौन, या बलवानों को प्रसन्न करने के लिए झूठ — दोनों पाप लाते हैं।
2. पुराणपुरुष मनुष्य-रूप में छिपे विचरते हैं। स्त्रियाँ उन्हें पहचानती हैं जिनके चरण शिव और लक्ष्मी पूजते हैं, जो वेणु और वन-पुष्प लिए व्रज में घूमते हैं। उनका नाम गाते हुए किया गया हर साधारण काम धन्य है।
3. अधर्म अपनों को ही निगलकर समाप्त होता है। कंस की अन्तिम आज्ञा नन्द, वसुदेव और स्वयं अपने पिता उग्रसेन को दण्डित करती है। अधर्म जब राज करता है तो किसी को नहीं छोड़ता; और निर्दोषों पर संकट आते ही प्रभु कर्म करते हैं।
4. भय में भी प्रभु-स्मरण उद्धार करता है। कंस ने जीवन के हर कर्म में चक्रधारी प्रभु को सामने देखा, और उस भयभरी तन्मयता से प्रभु का रूप पाया। तो प्रेमपूर्ण स्मरण क्या नहीं दे सकता?
5. वे ही सबके उद्गम, अन्त और रक्षक हैं। शोकाकुल रानियाँ देखती हैं कि प्राणियों का कोई द्रोही सुखी नहीं हो सकता और जो कृष्ण का अनादर करे वह कभी नहीं फलता।

एक भाक्तेमय चिन्तन

हमारे साथ केवल रंगभूमि की गर्जना ही नहीं, उसके अन्त की दो मौन मुद्राएँ रह जाती हैं। पहली — जगत् के स्वामी उन्हीं पुरुषों की विधवाओं को ढाढ़स देते हैं जिन्हें उन्होंने मारा है, और उनके पतियों की अन्त्येष्टि करवाते हैं; उनकी करुणा शत्रुओं के घर की दहलीज पर रुकती नहीं। दूसरी — पूरे नगर को मुक्त करके कृष्ण और बलराम उन दो बन्धियों के पास जाते हैं जो जन्म की रात से उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे, और उनके चरणों में सिर रखते हैं। देवकी ने इस पुत्र को केवल एक रात अपने पास रखा था; अब वह उसके पीड़क का संहारक बनकर सामने खड़ा है, और वह उसके ऐश्वर्य से इतनी अभिभूत है कि उसे थाम नहीं पाती। हर भक्त इन दोनों क्षणों को जानता है: प्रभु को अपना मानकर गले लगाने की लालसा, और वह सम्भ्रम जो हमें उसके बदले उनके चरणों में गिरा देता है।

एक दैनिक भक्ति-अभ्यास

आज कंस के अखण्ड स्मरण को प्रेम में बदलिए। जब भी आप खाएँ-पिएँ, चलें या लेटें, या बस अपनी साँस पर ध्यान दें, एक क्षण ठहरकर प्रभु को अपने सामने देखिए — शत्रु के भय से नहीं, मुक्त हुई सन्तान की कृतज्ञता से। यदि भयभरा स्मरण अत्याचारी को प्रभु के रूप तक ले गया, तो प्रेमभरा स्मरण आपको उनके चरणों तक ले जाए। धीरे-धीरे जप से आरम्भ करें: ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

उपसंहार

इस अध्याय में वह दीर्घ छाया अन्ततः हट जाती है जो कृष्ण-जन्म की रात मथुरा पर पड़ी थी। मल्ल गिरते हैं, और उनके पीछे वह राजा गिरता है जिसने अपने ही पिता की मृत्यु की आज्ञा दी थी। किन्तु अध्याय की गहनतम शिक्षा गिरे हुए अत्याचारी पर कही गई है: जिन प्रभु से वह बिना विराम डरता रहा, वही प्रभु उसे प्राप्त हो गए। हम, जिन्हें उनसे डरने की आवश्यकता नहीं, उन्हें उसी निरन्तरता से और प्रेम से स्मरण करें, और जिस हाथ ने देवकी-वासुदेव की बेड़ियाँ तोड़ीं, वही हाथ हर उस बन्धन को खोल दे जो हमारे हृदय को उनसे दूर रखता है।

श्रीमद्भागवतम् का दिव्य ज्ञान हमारे हृदयों में शुद्ध भक्ति जगाए।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

जय श्री माधव।

संदर्भ एवं आभार

- मूल संस्करण: गीता प्रेस, श्रीमद्भागवत महापुराण (अंग्रेज़ी), दशम स्कन्ध (पूर्वार्ध), चतुश्चत्वारिंश अध्याय।
- शृंखला: श्रीमद्भागवतम् विज़डम • बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट।
- पण्डित डॉ. श्री काशीनाथ मिश्र के आध्यात्मिक मार्गदर्शन एवं अनुशंसा के अनुसार प्रस्तुत।

यह लेखक के अपने शब्दों में एक मौलिक, श्रद्धापूर्ण पुनर्कथन है, जिसमें संक्षिप्त उद्धृत श्लोक देवनागरी एवं लिप्यन्तरण सहित दिए गए हैं और उनके अर्थ सारांश रूप में प्रस्तुत हैं। यह किसी एक प्रकाशक के सतत अनुवाद या टीका का पुनरुत्पादन नहीं है। किसी प्रकाशक के संबंध या समर्थन का दावा नहीं किया गया है।

॥ हरि ॐ तत्सत् ॥

जय श्री माधव

ऑनलाइन पढ़ें: kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-canto-10-chapter-44-the-killing-of-kamsa-hi.html

श्रीमद्भागवतम् विज्ञानम् • कल्कि अवतार इंटरनेशनल • बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट

